मज़ाखटोला

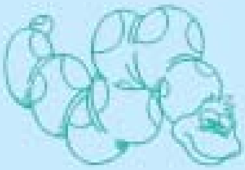

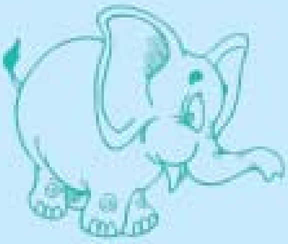

मज़ाखटोला

किताब का यह भाग हास्य या हँसी की रचनाओं का है। 'किसी बात या रचना में ऐसा क्या है कि उसे सुनने या पढ़ने से हमें हँसी आ जाती है?' इस प्रश्न का उत्तर हम एक चुटकुले की मदद से ढूँढ़ सकते हैं–

अध्यापक– 'मैंने तुम्हें गाय और घास का चित्र बनाने के लिए कहा था, पर तुम्हारा कागज़ तो कोरा पड़ा है।'

दिनेश– 'सर, मैं घास और गाय का चित्र बना रहा था पर जब तक चित्र पूरा होता, गाय घास खाकर अपने घर चली गई।'

इस चुटकुले में तीन ऐसी चीज़ें साफ़-साफ़ देखी जा सकती हैं जो लगभग हरेक हास्य रचना में होती हैं-

1. स्थिति का दबाव या लाचारी
2. लाचारी से निपटने के लिए कोई एकदम नई कल्पना या सूझ
3. शुरू की स्थिति का उलट जाना

चुटकुले की शुरुआत में दिनेश पर यह दबाव है कि वह अपना चित्र दिखाए। चित्र उसने बनाया ही नहीं है, दिखाएगा क्या? मगर अपनी कल्पना से वह एक ऐसा उत्तर देता है जिसमें कमी ढूँढ़ना मुश्किल है। उसके उत्तर को हम कल्पनाशील कह सकते हैं। जो चीज़ हमें हँसने के लिए मज़बूर करती है, वह यही कल्पनाशीलता या सूझबूझ है जो एक दबाव वाली स्थिति को बदल देती है। ज़ाहिर है, यह पूरी घटना काल्पनिक है, यानी वास्तव में नहीं हो सकती।

इस तरह देखें तो हम कह सकते हैं कि हर हास्य रचना एक काल्पनिक स्थिति का निर्माण करती है। हमें हँसाकर वह रोज़ाना की वास्तविक दुनिया या ज़िंदगी के दबावों से थोड़ी देर के लिए मुक्ति दिलाती है। हास्य रचनाएँ हमें कुछ सिखाने की कोशिश नहीं करतीं, वे केवल हँसाती हैं। पर ऐसी रचनाओं को गौर से देखकर हम यह समझ सकते हैं कि कोई रचना या उसकी भाषा हमें क्यों और कैसे हँसाती है।

ऊपर दी गई तीन विशेषताओं को इस खंड में शामिल रचनाओं में ढूँढ़ा जा सकता है। **चावल की रोटियाँ** शीर्षक नाटक में कोको नाम

के लड़के की लाचारी बढ़ती चली जाती है। चावल की रोटियाँ अकेले बैठकर खाने की उसकी इच्छा अंत तक पूरी नहीं होती। दूसरी तरफ़ **एक दिन की बादशाहत** में रोज़ाना रहने वाली स्थिति उलट जाती है। घर के बड़ों को एक दिन बच्चों की तरह जीना पड़ता है।

उलटी हुई स्थिति का मज़ा हम **गुरु और चेला** में भी देख सकते हैं। यह एक ऐसी अँधेर नगरी की कहानी है जहाँ हर चीज़ एक जैसी कीमत पर बिकती है। ऐसी नगरी में गुरु और चेला एक मुसीबत में बुरी तरह फँस जाते हैं, पर अंत में एक अनोखी स्थिति बनती है और वे बच जाते हैं। इस कविता की भाषा पर ध्यान दें तो हम शब्दों और मुहावरों के प्रयोग में छिपी हँसी को पहचान सकते हैं।

स्वामी की दादी शीर्षक कहानी में स्वामीनाथन के भोले-भाले प्रश्न सुनकर उसकी दादी मन-ही-मन खुश होती है। शायद दो बातें इस कहानी को मज़ेदार बनाती हैं– एक, दादी स्वामी के सवालों को बहुत ज़्यादा गंभीरता से लेती हैं। दूसरे, दादी-पोता दोनों में अपनी-अपनी बात कहने की उतावली और होड़ होती है।

पहेली बुझाने वाली कहानियाँ भी एक अलग तरह का आनंद देती हैं। अकबर-बीरबल के **किस्से** इसीलिए लोकप्रिय हैं कि उनमें अकबर के कठिन प्रश्नों का जवाब बीरबल बड़ी चतुराई से देते हैं। गोनू झा के किस्से भी इसी प्रकार के हैं।

मज़ा देने वाली रचनाओं को हम एक और कोण से देख सकते हैं– हाज़िरजवाबी, व्यंग्य और हँसाने वाली परिस्थितियाँ, घटनाक्रम तथा अतिशयोक्ति। यदि हम **मज़ाखटोला** की रचनाओं को इस दृष्टि से देखें तो **गुरु और चेला** तथा गोनू झा का किस्सा **बिना जड़ का पेड़** हाज़िरजवाबी और सूझबूझ के नमूने हैं। **चावल की रोटियाँ** और **एक दिन की बादशाहत** में हास्य के तत्व परिस्थितियों और घटनाक्रम से पैदा होते हैं। **स्वामी की दादी** हमें हँसाता नहीं है, पर दादी-पोते के बीच मज़ेदार संवाद पढ़कर हम मुस्कुराते ज़रूर हैं। **ढब्बू जी** के पहले कार्टून में अतिशयोक्ति से हास्य पैदा होता है तो दूसरा कार्टून व्यंग्य का उदाहरण है।

बच्चों में स्वस्थ और बुद्धिमत्ता पूर्ण हास्यबोध पैदा करने के लिए हाज़िरजवाबी और सूझबूझ की लोककथाएँ, कार्टून और हास्य-व्यंग्य की रचनाएँ अधिक-से-अधिक उपलब्ध कराई जानी चाहिए।